एक संघर्षशील प्रगतिशील वामपंथी कार्यकर्ता : योगेश दीवान

योगेश दीवान एक जाने–माने प्रगतिशील वामपंथी कार्यकर्ता हैं वे युवावस्था से ही वामपंथी राजनैतिक कार्यकर्ता के तौर पर मजदूरों और आमजनता के अधिकारो के लिये काम करते रहे हैं। उनका लंबे समय से प्रदेश के जनादोंलनों के साथ जुड़ाव रहा है। नर्मदा बचाओ आदोंलन के साथ उनका नजदीक का रिश्ता है।

1992 के बाद के बढ़ती सांप्रदायिकता का पुरजोर विरोध किया है। संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिये और अल्पसंख्यकों के मुद्दे पर अपनी आवाज को मुखरित करते हुये आम कार्यकर्ता की हैसियत से काम करना व सांस्कृतिक प्रतिरोध के तरीकों (नुक्कड़ नाटक, पोस्टर पंपलेट सघन संपर्कों तथा सभाओं के माध्यम से) को अपनाया है।

प्रदेश में सांस्कृतिक मोर्चे, जनसंघर्ष मोर्चा, भारत ज्ञान विज्ञान समिति, जननाट्य मंच एवं प्रगतिशील लेखक संघ के साथ सक्रिय जुड़ाव के साथ सक्रिय जुड़ाव है, साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर आल इंडिया सेकूलर फोरम, इंसाफ, भारत जनांदोलन, राष्ट्रीय आंदोलनों का समन्वय, पीपुल्स यूनियन फार सिविल लिबर्टी जैसे संगठनो एवं आंदोलनों को प्रदेश में समर्थन व आगे ले जाने के लिये प्रतिबद्ध हैं।

उनका जल, जंगल और जमीन के मुद्दों पर ज्यादा काम है तथा इन मुद्दों लगभग 12 पुस्तकें प्रकाशित हुई है। उनका काम वैचारिक स्तर के साथ–साथ जमीनी स्तर पर भी संघर्ष को उभरने के लिये ज्यादा है इसलिये लोकतांत्रिक अधिकारों के लिये धरने, प्रदर्शन, आंदोलन करने पर उन्हे जेल भी जाना पड़ा है।

वर्तमान वे पीपुल्स रिसर्च सोसायटी (जो प्रदेश के वैचाारिक, अकादमिक, पत्रकारीय और विभिन्न विशेषज्ञता एवं जमीनी अनुभव वाले साथियों का समूह है) के साथ काम कर रहे हैं। सोसायटी ने पिछले 8 वर्षों में सांप्रदायिकता, अल्पसंख्यकों के अधिकार व शोधमूलक कार्यों में प्रदेश और देश में अपनी पहचान बनाई है। इसके साथ ही प्रदेश स्तर पर वंचित वर्गो के मुद्दों को राज्य के स्तर पर उठारने के लिये ''जनपहल'' नामक मंच को बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

वे खेती, जमीन, महिला मुद्दों एवं वैश्वीकरण के मुद्दे पर गहरी समझ रखने वाले स्रोत व्यक्ति हैं। अपनी प्रगतिशील वाामपंथी वैचारिक सोच एवं प्रतिबद्धता के साथ जुड़ाव व लोगों के साथ के संघर्ष में लगातार काम कर रहे हैं। घटते लोकतांत्रिक मूल्यों, पूजींवादी और बाजार आधारित गला घोटने वाली व्यवस्था के बीच भी आम आदमी के अधिकारों के लिये ''संघर्ष की लौ को तेज करने'' में लगे हुये हैं। वे युवाओं के बीच वैचारिक विमर्श, बहस, तर्क और संवादों की कड़ी हैं तथा लगातार युवाओं के बीच प्रगतिशील विचारों की स्थापना के काम सतत् लगे हुये हैं।